हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों के निराकरण हेतु उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम के प्रभाव का प्रयोगात्मक अध्ययन

अंदलीब*

जिस प्रकार मौखिक भाषा में शब्दों के शुद्ध उच्चारण में अशुद्धियाँ हो सकती हैं, उसी प्रकार लिखित भाषा में छात्र प्रायः शब्दों के शुद्ध रूप-लेखन अथवा वर्तनी में भी अशुद्धियाँ करते हैं। शुद्ध वर्तनी शिक्षण में प्राथमिक स्तर पर अध्यापक की भूमिका के महत्त्व को समझते हुए इस शोध-पत्र में भावी अध्यापकों अर्थात् (डी.एल.एड. हिंदी माध्यम) के प्रथम वर्ष में अध्ययनरत 50 महिला तथा पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों का अध्ययन किया गया। उनकी वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के निराकरण के लिए इस प्रयोगात्मक शोध में पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण के मध्य में उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम भी दिया गया। शोध के परिणामों में यह कार्यक्रम शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों के निराकरण में प्रभावी पाया गया।

भाषा विचाराभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा, संसार की सुव्यवस्थित भाषाओं में से एक है। भाषा के दो मुख्य रूप हैं— मौखिक तथा लिखित। जिस प्रकार मौखिक भाषा में शब्दों के शुद्ध उच्चारण में अशुद्धियाँ हो सकती हैं, उसी प्रकार लिखित भाषा में छात्र प्रायः शब्दों के शुद्ध रूप-लेखन अथवा वर्तनी में भी अशुद्धियाँ करते हैं। वर्तनी का शाब्दिक अर्थ है—वर्तन या अनुवर्तन अर्थात् पीछे-पीछे चलना। अशुद्ध वर्तनी के तीन मुख्य कारण हैं —

हिंदी वर्णमाला के वर्णों का सही ज्ञान न होना

हिंदी वर्णमाला के कुछ वर्णों के दो रूप प्रचलित होने के कारण, संयुक्ताक्षरों के आकार तथा मात्राओं के प्रयोग का सही ज्ञान न होने के कारण, व्यंजनों के संयोग के नियम, विभक्ति-चिह्न तथा पंचम वर्ण के उचित प्रयोग का ज्ञान न होना आदि कारणों से भी छात्र लेखन में अशुद्धियाँ करते हैं।

अशुद्ध उच्चारण

हिंदी ध्वनियों के उच्चारण तथा ध्वनि चिह्नों की समरूपता के कारण अशुद्ध उच्चारण होने से वर्तनी के भी अशुद्ध होने की आशंका बनी रहती है।

* *सहायक प्रोफ़ेसर*, आई.ए.एस.ई., जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

व्याकरण के नियमों का ज्ञान न होना

संधि के नियम, उपसर्ग और प्रत्यय के योग से शब्द बनाने के नियम, लिंग, वचन तथा विकार सबंधी नियम आदि का उचित ज्ञान न होने के कारण वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ होती हैं।

हिंदी भाषा के शुद्ध उच्चारण तथा वर्तनी शिक्षण में अध्यापक की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। विशेषकर प्राथमिक स्तर पर क्योंकि प्राथमिक स्तर पर सीखी गयी भाषा भविष्य में सीखे जाने वाले ज्ञान की आधारशिला है। इसी विषय को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक स्तर पर हिंदी-शिक्षण के लिए प्रशिक्षण ले रहे शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों का अध्ययन किया गया।

समस्या कथन

समस्या कथन इस प्रकार है — हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों के निराकरण हेतु उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम के प्रभाव का प्रयोगात्मक अध्ययन।

चरों की परिचालन परिभाषा

वर्तनीगत अशुद्धियाँ — एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित दसवीं कक्षा की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा विरचित 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' नामक निबंध का श्रुतलेख शिक्षक-प्रशिक्षुओं को दिया गया। वर्तनीगत अशुद्धियों का तात्पर्य इस लेख में शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा की जाने वाली वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ हैं।

उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम — उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों के निराकरण के लिए पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण के मध्य में संचालित, गद्य-शिक्षण की 'स्पष्टीकरण विधि' पर आधारित तथा शोधार्थी द्वारा निर्मित त्रिदिवसीय कार्यक्रम है।

हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षु — हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं से अभिप्राय जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के डी.एल.एड. कार्यक्रम प्रथम वर्ष (हिंदी माध्यम) में अध्ययनरत स्त्री एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों से हैं।

अनुसंधानात्मक प्रश्न

1. हिंदी माध्यम के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा की गई हिंदी की वर्तनीगत अशुद्धियों का वर्तमान स्तर क्या है?
2. क्या उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा की गई वर्तनीगत गलतियों का निराकरण करने में प्रभावकारी है?

शोध के उद्देश्य

1. हिंदी माध्यम के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी हिंदी की वर्तनीगत अशुद्धियों की तुलना करना।
2. हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों पर उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. हिंदी माध्यम के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों पर उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम के प्रभाव की तुलना करना।

शोध की शून्य परिकल्पनाएँ

1. हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी हिंदी की वर्तनीगत अशुद्धियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों पर उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. हिंदी माध्यम के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों पर उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध का सीमांकन

1. इस शोध का सीमांकन केवल राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तक किया गया है।
2. यह शोध केवल जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में डी.एल.एड. कार्यक्रम में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षुओं तक सीमित है।
3. यह शोध केवल हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं तक सीमित है।

शोध विधि तथा अनुसंधानात्मक अभिकल्प

प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध में प्रयोगात्मक विधि के 'एकल समूह पूर्व परीक्षण–पश्च परीक्षण अभिकल्प' का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की लक्ष्य जनसंख्या (target population) दिल्ली में डी.एल.एड. पाठ्यक्रम, हिंदी माध्यम में अध्ययनरत समस्त शिक्षक-प्रशिक्षु हैं। इस शोध के लिए जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में डी.एल.एड., हिंदी माध्यम में अध्ययनरत 24 पुरुष तथा 26 महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं का अध्ययन किया गया। न्यादर्श (sample) के चयन में 'सोद्देश्य न्यादर्श तकनीक' (purposive sampling technique) का प्रयोग किया गया।

शोध उपकरणों का निर्माण तथा प्रदत्तों की संकलन प्रक्रिया

शोधक ने पूर्व चयनित न्यादर्श पर एक समूह के रूप में हिंदी वर्तनी संबंधी उनके ज्ञान का निदानात्मक परीक्षण किया। जिसके लिए शोधक ने एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित दसवीं कक्षा की हिंदी की पाठ्यपुस्तक से आचार्य महावीर प्रसाद द्वारा विरचित 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन' नामक निबंध का चयन किया। इस निबंध का चयन इसमें हिंदी भाषा के कुछ तत्सम शब्द रूपों तथा रूढ़ शब्दावली के प्रयोग के कारण किया गया। पूर्व परीक्षण में शोधक के द्वारा आचार्य महावीर प्रसाद द्वारा विरचित 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन' नामक निबंध स्पष्टतः पढ़े जाने के साथ-साथ शिक्षक-प्रशिक्षुओं को अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं में श्रुतलेख लिखने का भी निर्देश दिया गया। पूर्व परीक्षण के आधार पर शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का विश्लेषण किया गया तथा इसके अनुसार उनकी वर्तनीगत अशुद्धियों के निराकरण के लिए हस्तक्षेप कार्यक्रम का निर्माण किया गया। पूर्व परीक्षण के चार दिन पश्चात् त्रिदिवसीय हस्तक्षेप कार्यक्रम का संचालन किया गया। इस कार्यक्रम में शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का निराकरण गद्य-अध्यापन की 'स्पष्टीकरण विधि' के माध्यम से किया गया।

इस विधि में शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध लिखे गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी तथा अर्थ, उपसर्ग, प्रत्यय, समास, संधि-विच्छेद, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, अर्थ प्रसार तथा वाक्य-प्रयोग के माध्यम से उन शब्दों का विश्लेषण करके समझाया गया। तदोपरांत, छात्रों की समझ की जाँच हेतु उन्हें एक-एक करके शोधक के द्वारा बोले गए शब्द श्यामपट्ट पर शुद्ध वर्तनी के साथ लिखने के लिए कहा गया। हस्तक्षेप कार्यक्रम का संचालन तीन दिवस तक चला। इसके चार दिन पश्चात् शिक्षक-प्रशिक्षुओं का पश्च परीक्षण किया गया, जिसमें उन्हें वही श्रुतलेख लिखने का निर्देश दिया गया जो उन्होंने पूर्व परीक्षण में लिखी थी। इस कार्यक्रम का एक अतिरिक्त लाभ यह हुआ कि शिक्षक-प्रशिक्षु शब्दों की शुद्ध वर्तनी के साथ-साथ उनके उचित अर्थ समझ पाए तथा विश्लेषण विधि के माध्यम से पर्यायवाची, विलोम शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास आदि के विषय में भी सीख पाए। साथ ही शब्दों का वाक्य में प्रयोग कर पाने में भी सक्षम हो पाए।

प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीक

प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक विधि के 'एकल समूह पूर्व परीक्षण और पश्च परीक्षण अभिकल्प' का प्रयोग किया गया है। प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण युग्मित न्यादर्श परीक्षण (Paired sample 't' test) के द्वारा किया गया है।

उद्देश्य 1 से संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम तथा उनकी व्याख्या

हिंदी माध्यम के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी हिंदी की वर्तनीगत अशुद्धियों की तुलना करना।

तालिका 1 — उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम की संरचना

क्र.स.	शब्द	अर्थ	स्पष्टीकरण विधि	स्पष्टीकरण
1.	शोक	दुःख, खेद	विलोम	हर्ष
2.	विद्यमान	उपस्थित	प्रत्यय	विद्य+मान
3.	गृह-सुख	गृहस्थ सुख	समास	गृह-सुख (तत्पुरुष समास)
4.	धर्म-शास्त्र	धर्म संबंधी शास्त्र	समास	धर्म-शास्त्र (तत्पुरुष समास)
5.	संस्कृत के ग्रंथ	संस्कृत की पुस्तकें	अर्थ-प्रसार	संस्कृत भाषा में लिखी हुई वृहत पुस्तकें
6.	कुशिक्षित	बुरी शिक्षा प्राप्त किये हुए	उपसर्ग	कु+शिक्षित
7.	सुशिक्षित	अच्छी शिक्षा प्राप्त किये हुए	उपसर्ग	सु+शिक्षित

तालिका 2 — स्वतंत्र न्यादर्श परीक्षण (Independent sample 't' test)

वर्तनीगत त्रुटियाँ अंक	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता-डिग्री	t का मान	p का मान	टिप्पणी
छात्र	24	22.3	13.9	48	1.26	0.21	सार्थक नहीं है*
छात्राएँ	26	17.1	15.0				

तालिका 2 से यह निष्कर्ष निकलता है कि पुरुष तथा महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उद्देश्य 2 से संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम तथा उनकी व्याख्या

हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों पर उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

तालिका 3 के अवलोकन से प्रतीत होता है कि t अनुपात 10.13 है तथा p का मान .000 है जो .01 विश्वस्तता के स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 2 को निरस्त किया जाता है। यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों पर उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम का सार्थक प्रभाव पड़ता है। तालिका 4 के अवलोकन से परिलक्षित है कि पूर्व परीक्षण का माध्य लाभांक 19.6 है तथा पश्च परीक्षण का माध्य लाभांक 4.3 है। पश्च परीक्षण के निम्न माध्यांक से स्पष्ट होता है कि शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा पश्च परीक्षण के श्रुतलेख में पूर्व परीक्षण की तुलना में निम्न वर्तनीगत अशुद्धियाँ की गयी हैं। अर्थात् उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों को कम करने में प्रभावकारी सिद्ध हुआ है।

उद्देश्य 3 से संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम तथा उनकी व्याख्या

हिंदी माध्यम के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों पर उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम के प्रभाव की तुलना करना।

तालिका 3 युग्मित न्यादर्श परीक्षण (Paired Sample 't' Test)

	युग्म अंतर			t का मान	स्वतंत्रता डिग्री	p का मान (Sig. 2 tailed)
	माध्य लाभांक	*मानक विचलन*	*माध्य की मानक त्रुटि*			
वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ पूर्व एवं पश्च परीक्षण	15.2	10.6	1.50	10.13	49	.000

तालिका संख्या 4 युग्मित न्यादर्श सांख्यिकी (Paired Sample Statistics)

	संख्या	माध्य लाभांक	मानक विचलन	*माध्य की मानक त्रुटि*
पूर्व परीक्षण	50	19.6	14.5	2.06
पश्च परीक्षण	50	4.3	4.8	0.68

तालिका संख्या 5 के युग्म 1 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं के पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण के संदर्भ में t का मान 8.59 है जो .05 तथा .01 दोनों स्तरों पर सार्थक है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों को कम करने में उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम प्रभावकारी है। इसी प्रकार महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं के पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण

तालिका 5 युग्मित न्यादर्श परीक्षण (Paired Sample t Test)

	युग्म अंतर			t का मान	स्वतंत्रता डिग्री	p का मान (Sig. 2 tailed)
	माध्य लाभांक	*मानक विचलन*	*माध्य की मानक त्रुटि*			
युग्म 1 वर्तनीगत त्रुटि (छात्र) पूर्व-वर्तनीगत त्रुटि (छात्र) पश्च	17.3	9.87	2.01	8.59	23	.000
युग्म 2 वर्तनीगत त्रुटि (छात्राएँ) पूर्व-वर्तनीगत त्रुटि (छात्राएँ) पश्च	13.3	11.12	2.18	6.10	25	.000

तालिका संख्या 6 युग्मित न्यादर्श सांख्यिकी (Paired Sample Statistics)

		माध्य लाभांक	संख्या	मानक विचलन	*माध्य की मानक त्रुटि*
युग्म 1	वर्तनीगत त्रुटि (छात्र) पूर्व	22.3	24	13.9	2.83
	वर्तनीगत त्रुटि (छात्र) पश्च	5.0	24	4.53	0.92
युग्म 1	वर्तनीगत त्रुटि (छात्राएँ) पूर्व	17.12	26	15.03	2.95
	वर्तनीगत त्रुटि (छात्राएँ) पश्च	3.81	26	5.15	1.01

के संदर्भ में t का मान 6.10 है तथा p का जो न केवल .05 स्तर पर अपितु .01 स्तर पर भी सार्थक है। जिससे यह स्पष्ट चलता है कि महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों के सुधार पर उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

तालिका संख्या 5 का अवलोकन करने पर हम पाते हैं कि पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण में पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के माध्य का लाभांक 17.3 है। पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण में महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के माध्य का लाभांक 13.31 है। महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं का लाभांक पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं की तुलना में कम होने का आशय यह है कि पश्च परीक्षण में महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं ने पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं की तुलना में वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ कम की हैं।

शोध के परिणाम व निष्कर्ष

1. पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं तथा महिला प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों को कम करने में प्रभावकारी है।
3. उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं की तुलना में महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों को कम करने में अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुआ है।

शोध के निहितार्थ

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट है कि पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं तथा महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों में कोई सार्थक अंतर न होने का अर्थ संभवतः यह भी है कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा

की वर्तनी सिखाने में पुरुष तथा महिला में कोई अंतर नहीं होता है। उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों को कम करने में प्रभावकारी सिद्ध हुआ है। अतः प्राथमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों का समान प्रकार के हस्तक्षेप कार्यक्रमों के माध्यम से निराकरण किया जा सकता है। उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षुओं की तुलना में महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों को कम करने में अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुआ है। इसका कारण संभवतः यह है कि सामान्यतः महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक तीव्र गति से भाषा सीखती हैं तथा भाषा को शुद्ध रूप में बोलने का आदर्श अनुकरण शीघ्रता से कर लेती हैं।

आगे शोध के लिए सुझाव

- हिंदी भाषा के शुद्ध रूप को लिखना सिखाने के लिए वर्तनी-शुद्धि अति आवश्यक है। इसके लिए उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अतः इनके प्रयोग द्वारा भाषा शुद्धि की जानी चाहिए।
- उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम केंद्रित समान प्रकार के शोध विभिन्न स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों को दूर करने हेतु किये जा सकते हैं।
- न केवल शिक्षक-प्रशिक्षुओं अपितु सभी अकादमिक स्तरों के विद्यार्थियों की वर्तनीगत अशुद्धियों को हस्तक्षेप कार्यक्रमों के माध्यम से दूर किया जा सकता है।
- कुछ हस्तक्षेप कार्यक्रम न केवल वर्तनी-शुद्धि अपितु उच्चारण-शुद्धि हेतु भी बनाये जा सकते हैं।
- विद्यालयी शिक्षकों की वर्तनीगत अथवा उच्चारण संबंधी अशुद्धियों के निराकरण हेतु भी कुछ आवश्यकता-केंद्रित उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम बनाये जा सकते हैं तथा सरकारी व निजी विद्यालयों के शिक्षकों पर प्रयोग किये जा सकते हैं।

कुछ उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम न केवल हिंदी भाषा, बल्कि अन्य भाषाओं के शुद्ध लिखित अथवा उच्चरित रूप को सीखने/सिखाने के लिए बनाये जा सकते हैं।

संदर्भ

तिवारी, भोलानाथ. 2011. *हिंदी भाषा की संरचना*. वाणी प्रकाशन. नयी दिल्ली.

दहिया, इंदु. 2015. 'वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के उपचारीकरण में अध्येता केंद्रित तथा कार्यकलाप-आधारित अधिगम-अध्यापन उपागम की प्रभावशीलता का प्रायोगिक अध्ययन'. *अन्वेषिका — अध्यापक शिक्षा की पत्रिका*. खंड 10 (1). राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नयी दिल्ली, पृष्ठ 1–17.

मिल्स, जी. ई. एवं आर.एल. गे, 2017. *शैक्षिक अनुसंधान*. बारहवाँ संस्करण. पियर्सन एजुकेशन. लंदन, इंग्लैंड.

सिंह, सावित्री. 1992. *हिंदी शिक्षण*. लॉयल बुक्स पब्लिकेशन लिमिटेड, मेरठ.